अनंत व्रत कथा — शीला और कौंडिन्य का पुनर्कथन

Anant Vrat Katha — Complete Selected Retelling

Source: Vrataraja — 1897 Khemraj print, controlling Anant account on physical scans 559–567. Also compared: Vrataraja — catalogued 1884 Shri Venkateshwar print, complete comparison scans 687–698; 1897 metadata — edition identity and CC0 record.

Valkala's own retelling of the katha in Vrataraja, 1897 Khemraj Sanskrit print, Anant-vrat katha 1–133, not a transcription of the original text.

कृष्ण और युधिष्ठिर का संवाद

KATHA 1–32

सूत राजसूय यज्ञ की भूमिका सुनाते हैं। कृष्ण, भीम और अर्जुन के साथ युधिष्ठिर का यज्ञ और सभा बनती है। अनेक अतिथि आते हैं। दुर्योधन सभा में जल और चमकते फर्श का भेद नहीं पहचानते; गिरने पर हँसी होती है और वे क्रोधित होते हैं। आगे छलपूर्ण जुए का प्रसंग आता है। पांडव राज्य खोकर वन में जाते हैं। कृष्ण वहाँ उनसे मिलने आते हैं। कथा के ये प्रसंग बाद के उपदेश की भूमिका हैं, अपमान या जुए का समर्थन नहीं।

युधिष्ठिर पूछते हैं कि परिवार सहित संकट से कैसे निकलें और किस देवता का स्मरण करें। कृष्ण भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी के अनंत व्रत का वर्णन करते हैं। युधिष्ठिर पूछते हैं: अनंत कौन हैं—शेष, तक्षक, परमात्मा या ब्रह्म? कृष्ण कहते हैं कि अनंत उनका ही स्वरूप है। वे अनंत को काल से जोड़ते हैं, जिसमें छोटे समयखंड, दिन-रात, पक्ष, महीने, ऋतु, वर्ष और युग आते हैं।

कृष्ण अपने पृथ्वी का भार कम करने वाले अवतार और व्यापक दिव्य सत्ता का वर्णन करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवसमूह, सूर्य-चंद्र, विश्व, दिशाएँ, पर्वत, नक्षत्र, पृथ्वी और पाताल उस व्यापकता में कहे जाते हैं। यह धार्मिक विश्वदृष्टि है, भौतिक विज्ञान या पंचांग की गणना नहीं। युधिष्ठिर अब पूछते हैं कि पहले किसने यह व्रत किया और उसका विधान तथा फल क्या कहा गया। कृष्ण शीला और कौंडिन्य की कथा आरंभ करते हैं।

Suta introduces Yudhishthira's Rajasuya sacrifice and assembly, made with Krishna, Bhima and Arjuna, with many guests. Duryodhana mistakes water and a shining floor; falling brings laughter and anger. Deceptive gambling follows. The Pandavas lose their kingdom and enter the forest, where Krishna visits. These events frame the later teaching, not endorsement of humiliation or gambling.

Yudhishthira asks how his family may escape distress and which deity to remember. Krishna describes an Anant vow on Bhadrapada Shukla Chaturdashi. Asked whether Anant is Shesha, Takshaka, the supreme self or Brahma, Krishna identifies Anant with his own form and with time: its small divisions, day and night, fortnights, months, seasons, years and ages.

He describes his incarnation to relieve the earth's burden and a universal divine presence encompassing Brahma, Vishnu, Shiva, gods, sun and moon, the cosmos, directions, mountains, stars, earth and netherworlds. This is a religious worldview, not physics or calendar calculation. Yudhishthira asks who previously observed the vow and what its method and benefits are said to be. Krishna begins the account of Shila and Kaundinya.

शीला, विवाह और अनंत-सूत्र

KATHA 33–76

कृतयुग में वसिष्ठ-गोत्र के सुमंतु ने भृगु की पुत्री दीक्षा से विवाह किया। उनकी बेटी का नाम शीला था, जिसे कथा सुशीला, अर्थात अच्छे आचरण वाली, भी कहती है। दीक्षा की मृत्यु के बाद सुमंतु कर्कशा से विवाह करते हैं। स्रोत उन्हें झगड़ालू कहता है; यह सभी सौतेली माताओं या स्त्रियों का मूल्यांकन नहीं। शीला घर की सजावट और मंगल-चित्रों में रुचि रखती हैं। बड़ी होने पर उनका विवाह ऋषि कौंडिन्य से होता है। विदाई के समय पिता कुछ भोजन देना चाहते हैं, पर घर के विवाद के कारण पर्याप्त सामग्री नहीं मिलती।

कौंडिन्य शीला को बैलगाड़ी में लेकर जाते हैं। यमुना के किनारे वे नित्य कर्म के लिए रुकते हैं। शीला लाल वस्त्र पहने स्त्रियों को पूजा करते देखती हैं और पूछती हैं कि वे क्या कर रही हैं। स्त्रियाँ अनंत-व्रत बताती हैं। कथा में चतुर्दशी, विष्णु की आराधना, चौदह गाँठों वाला रंगा सूत्र, अर्पण और भोजन बाँटने का वर्णन आता है। पुरुष और स्त्री के अलग हाथों का स्रोत-नियम भी है, लेकिन यहाँ किसी हाथ का निर्देश नहीं दिया जाता; इस चयन से हर परंपरा का मत तय नहीं होता। शीला स्त्रियों से सुनकर व्रत करती हैं, भोजन का कुछ भाग देती हैं और वापस यात्रा में जुड़ती हैं।

आगे घर में संपन्नता और मान-सम्मान का वर्णन होता है। एक दिन कौंडिन्य शीला के हाथ में सूत्र देखते हैं। वे संदेह करते हैं कि इससे उन्हें वश में करने की कोशिश है। शीला कहती हैं कि यह अनंत का स्मरण है और समृद्धि को उनकी कृपा से जोड़ती हैं। कौंडिन्य क्रोध में सूत्र को आग में फेंक देते हैं। शीला उसे बचाकर दूध में रखती हैं। कथा फिर घर की दशा बिगड़ने की ओर बढ़ती है। धन-वृद्धि का चमत्कार, संदेह और सूत्र जलाना कथा के प्रसंग हैं; धागा समृद्धि की गारंटी नहीं और साथी की आस्था पर नियंत्रण सही आचरण का निर्देश नहीं।

In the Krita age Sumantu, of Vasishtha's lineage, marries Diksha, Bhrigu's daughter. Their daughter is named Shila and described as Sushila, well-conducted. After Diksha dies Sumantu marries Karkasha. The source calls her quarrelsome; this is not a judgment of all stepmothers or women. Shila decorates the home with auspicious designs. She marries the sage Kaundinya. Her father wishes to provide food for their departure, but household conflict leaves little available.

Kaundinya takes Shila in an ox cart. They stop beside the Yamuna for his daily observances. Seeing red-clothed women worshipping, Shila asks about their practice. They describe Anant-vrat: Chaturdashi, worship of Vishnu, a coloured fourteen-knotted thread, offerings and sharing food. The source also distinguishes the hands used by men and women, but this reader prescribes neither hand and does not settle every tradition's position. Hearing the women, Shila observes the vow, gives part of the food and rejoins the journey.

Prosperity and esteem follow in the narrative. Later Kaundinya notices the thread on Shila's hand and suspects an attempt to control him. She says it remembers Anant and attributes prosperity to his favour. Angrily Kaundinya throws the thread into fire; Shila rescues it into milk. The story turns toward household decline. Miraculous enrichment, suspicion and burning the thread are story events: a thread does not guarantee wealth, and controlling a partner's faith is not a recommended practice.

हानि, वन में खोज और प्रार्थना

KATHA 77–110

घर की संपत्ति नष्ट होती है, पशु चले जाते हैं, आग और झगड़ों का वर्णन आता है। कौंडिन्य कारण पूछते हैं। शीला इसे अनंत के अपमान से जोड़कर उनका स्मरण करने को कहती हैं। यह स्रोत का धार्मिक कारण है, वास्तविक गरीबी, आग, पशु-हानि या रिश्तों के संकट का प्रमाणित कारण नहीं। पीड़ित व्यक्ति की आस्था या चरित्र पर दोष नहीं लगाया गया है।

कौंडिन्य वन में अनंत को खोजने जाते हैं। वे फल से भरा आम का वृक्ष देखते हैं, जिस पर पक्षी नहीं बैठते। फिर गाय, बैल, जल की लहरें आपस में मिलाते दो सुंदर सरोवर, गधा और हाथी मिलते हैं। वे हर एक से पूछते हैं कि क्या अनंत को देखा है। कोई उन्हें उनका पता नहीं देता। स्रोत उनके तप, थकावट, निराशा और गिर पड़ने का वर्णन करता है।

उनकी निराशा इतनी बढ़ती है कि वे जीवन छोड़ने की सोचते हैं। यहाँ स्रोत के आत्महानि के तरीके को नहीं दोहराया गया है और उसे भक्ति का आदर्श नहीं कहा गया है। उसी समय कथा में अनंत एक वृद्ध ब्राह्मण के रूप में आते हैं, उनका हाथ पकड़कर सहायता करते हैं और उन्हें एक गुफा के भीतर दिव्य नगर में ले जाते हैं। रत्नों, स्वर्ण और सुंदर भवनों के बीच अनंत का दिव्य रूप दिखाई देता है।

कौंडिन्य हाथ जोड़कर अनंत को प्रणाम करते हैं। वे जीवन की निष्फलता और संसार के कष्ट का उल्लेख कर दया माँगते हैं। अपनी क्रोधित भूल, घर के विनाश और अलगाव को स्वीकार करते हुए वे सहायता और क्षमा की प्रार्थना करते हैं। यह कथा का मोड़ है, संकट में अकेले कठोर तप करने या आत्महानि से दिव्य सहायता मिलने का वादा नहीं। वास्तविक संकट में भरोसेमंद लोगों और उचित सहायता का साथ लेना इस पुनर्कथन के विरुद्ध नहीं है।

Wealth is lost; the story describes cattle disappearing, fire and quarrels. Asked why, Shila associates this with disrespect of Anant and urges remembrance. This religious explanation is not an established cause of actual poverty, fire, animal loss or relationship distress. The sufferer's faith or character is not blamed.

Kaundinya seeks Anant in the forest. He finds a fruit-laden mango tree without birds, then a cow, a bull, two beautiful ponds exchanging their waves, a donkey and an elephant. He asks each whether Anant has been seen, but none provides a location. The source describes austerity, exhaustion, despair and collapse.

He becomes so desperate that he thinks of abandoning life. The source's self-harm method is not repeated or represented as exemplary devotion. Anant appears as an elderly Brahmin, takes his hand to help and leads him into a cave containing a divine city. Amid jewels, gold and beautiful buildings Anant's divine form is revealed.

With folded hands Kaundinya bows, speaks of life's futility and worldly suffering, and asks mercy. Acknowledging his angry mistake, household ruin and estrangement, he prays for help and forgiveness. This turning point is not a promise that severe solitary austerity or self-harm brings divine help. Seeking trustworthy people and appropriate assistance in actual distress does not contradict this retelling.

अनंत का उत्तर और पूर्ण समापन

KATHA 111–133

अनंत कौंडिन्य से घर लौटने और चौदह वर्षों तक व्रत करने को कहते हैं। वे परिवार, सुख और अंत में पुनर्वसु नक्षत्र से जुड़े स्थान का फल बताते हैं। ये स्रोत के दिव्य वचन हैं, पाठक से लिया गया संकल्प या बच्चों और समृद्धि की गारंटी नहीं। कौंडिन्य वन में मिले वृक्ष और प्राणियों का रहस्य पूछते हैं।

अनंत बताते हैं कि आम का वृक्ष पहले विद्वान था, जिसने अपना ज्ञान दूसरों को नहीं दिया। गाय उस भूमि का प्रतीक बताई जाती है जिसमें बोया बीज नहीं उपजता। बैल धर्म से जुड़ा है। दोनों सरोवर पहले बहनें थीं; वे धर्म-अधर्म की बात आपस में बाँटती थीं, लेकिन अतिथि, जरूरतमंद और माँगने वालों को भोजन या सहायता नहीं देती थीं। गधे को क्रोध और हाथी को मद से जोड़ा जाता है। वृद्ध ब्राह्मण स्वयं अनंत हैं और गुफा संसार की गहराई का रूपक है। ये कथा के नैतिक प्रतीक हैं, किसी पेड़, पशु, महिला या भूखे व्यक्ति के पिछले जन्म का वास्तविक निर्णय नहीं।

अनंत अदृश्य हो जाते हैं। कौंडिन्य इस अनुभव को स्वप्न जैसा मानकर घर लौटते हैं और कथा के अनुसार बताए हुए वर्षों तक व्रत करते हैं। सुख लौटने और विष्णु के स्मरण में रहने का वर्णन होता है। कृष्ण युधिष्ठिर को यह कथा सुनाकर अनंत के स्मरण का उपदेश देते हैं। अंतिम कथन में चौदह वर्ष और प्रत्येक वर्ष का पालन, पढ़ने-सुनने से पाप मिटने, हरि के स्थान की प्राप्ति तथा पांडवों का परिवार सहित अनंत की आराधना करना आता है।

सूत अंतिम फल-वचन के साथ कथा पूरी करते हैं। सुख, मुक्ति और वंश के धार्मिक आश्वासन स्रोत के भीतर हैं, वास्तविक दुख का दोष या अनिवार्य जीवन-भर का नियम नहीं। यहाँ अनंत-व्रत कथा समाप्त होती है। उसके बाद छपा अलग उद्यापन-विधान इस पाठ का हिस्सा नहीं है; यह पुनर्कथन उस विधि, धागा बाँधने के मंत्र या स्थानीय गणेश-विसर्जन कार्यक्रम का विकल्प नहीं।

Anant tells Kaundinya to return home and observe the vow for fourteen years, speaking of family, happiness and a final place associated with the Punarvasu star. These are divine promises within the source, not a commitment extracted from readers or guarantees of children and wealth. Kaundinya asks about the forest encounters.

Anant explains that the mango tree was formerly a learned man who withheld knowledge. The cow represents land where sown seed does not grow; the bull is associated with dharma. The two ponds were sisters who exchanged discussion of dharma and adharma but gave no food or help to guests, vulnerable people or those asking. The donkey is associated with anger and the elephant with pride. The old Brahmin is Anant himself and the cave a metaphor for the depths of worldly existence. These moral symbols do not establish an actual past-life judgment of a tree, animal, woman or hungry person.

Anant disappears. Returning home with the experience seeming dreamlike, Kaundinya observes the years described in the story. Happiness returns and he remains in remembrance of Vishnu. Krishna commends Anant's remembrance to Yudhishthira. The closing discourse includes fourteen years and annual observance,

claims that reading or hearing removes wrongdoing and leads to Hari's abode, and the Pandavas worshipping Anant with their family.

Suta completes the account with concluding benefit claims. Happiness, liberation and lineage remain devotional assurances within the source, not blame for actual suffering or mandatory lifelong rules. The Anant-vrat katha ends here. The separately printed udyapana manual that follows is excluded; this retelling is not a substitute for that rite, thread-tying formulas or a local Ganesh immersion programme.